पुरा महादेव मेरठ की ओर प्रस्थान

जगत्गुरु शंकाराचार्य श्री निरंजनदेव तीर्थ बड़ौत-मेरठ मार्ग पर स्थिति पुरा महादेव मन्दिर में किसी विशेष कार्यक्रम को लेकर ठहरे हुए थे कि उन्होंने वहाँ भी एक बयान दिया कि "सती प्रथा शास्त्र सम्मत है, आर्य समाज का इस विषय पर ज्ञान अधूरा है, वह चाहे तो मैं इस विषय पर शास्त्रार्थ करने को तैयार हूँ।" स्वामी अग्निवेश जी ने उनके इस चैलेंज को स्वीकार करते हुए स्वामी इन्द्रवेश जी से परामर्श कर दिल्ली से पुरा महादेव तक पद-यात्रा निकालने की घोषणा कर दी। यात्रा का नेतृत्व अस्वस्थ होते हुये स्वयं स्वामी इन्द्रवेश जी ने किया क्योंकि संस्कृत एवं शास्त्रों के पाण्डित्य की दृष्टि से वे स्वामी अग्निवेश के सदैव पूरक होते थे।

शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में मात देने के लिए आर्य समाज की परम विदुषी, संस्कृत में धारा प्रवाह बोलने वाली, वेदज्ञ महिला बरेली की सावित्री देवी शर्मा को तैयार किया गया। सावित्री देवी जी विश्व की प्रथम वेदाचार्या महिला थीं। स्वामी अग्निवेश जी ने घोषणा कर दी कि शास्त्रार्थ वेदों को आधार मान कर होगा जो धर्म का मूल हैं। शंकराचार्य जी ने भी सती-प्रथा को वेद-सम्मत कहते हुए अपना वक्तव्य दिया था। अपने वक्तव्य में उन्होंने, **'स्त्री शुद्रो नाधियातम्'** (स्त्री व शूद्रों को वेद शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए) के आधार पर यह भी कह दिया था कि नारी को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है। आर्य समाज वेद को अपौरुषेय मानता है, मानव सृष्टि के आदि में उसके आविर्भाव की बात करता है अतः

उसमें इतिहास नहीं मानता। जब वेदों में इतिहास ही नहीं है तो उसमें सती-प्रथा कहाँ से आयेगी यह मोटी बात भी शंकराचार्य के दिमाग में नहीं आ रही थी। स्वामी जी का तर्क था कि महिलाओं को यदि वेद पढ़ने का अधिकार ही नहीं है तो वेद मंत्रों के साथ ऋषियों के साथ साथ ऋषिकाओं का नाम कैसे आ गया जो मन्त्र द्रष्टा थीं? जैसे ही वेद-विदुषी सावित्री देवी शर्मा का नाम सामने आया और शंकराचार्य जी ने उनका परिचय इधर-उधर से प्राप्त किया तो वे घबरा गये। एक नारी से सामुख्य करना, वेद के आधार पर शास्त्रार्थ करना और फिर पराजित होना - इस जलालत भरी कल्पना से ही शंकराचार्य जी मैदान छोड़ने पर आमादा हो गये। लेकिन जिस गद्दी पर वे बैठे थे, सीधे मैदान छोड़ने का अर्थ था, उस गद्दी की गरिमा को नष्ट करना। अतः वे बहाना तलाशने लगे कि शास्त्रार्थ से कैसे बचा जाये। अन्य कोई चारा न देख उन्होंने स्वामी अग्निवेश के ऊपर यह आरोप मढ़ दिया कि वे दिल्ली से जिन लोगों को साथ ला रहे हैं उनसे वे उनकी हत्या कराना चाहते हैं। ऐसा अनर्गल आरोप लगाकर उन्होंने जहाँ अपने अनुयायियों को भड़काने में सफलता प्राप्त की वहाँ पुलिस को भी हरकत में आने को विवश किया। ऐसे चुनौती भरे अवसरों पर पौराणिकों का वितंडा खड़ा करना, अनर्गल आरोप लगाना, तर्कहीन बातें करना, शास्त्रों की दुहाई देना, लोगों को प्रतिरोध के लिए सड़क पर उतार कर अभद्र प्रदर्शन कराना या हो-हल्ला मचवाना उनकी पुरानी चालें रही हैं। यही सब कुछ शंकराचार्य ने पुरा महादेव मन्दिर में किया। नतीजा यह निकला कि स्वामी अग्निवेश जी व उनके 300-400 साथियों को पुलिस ने हस्तक्षेप कर बीच में ही रोक लिया और शंकराचार्य तथा डॉ. सावित्री देवी शर्मा के बीच शास्त्रार्थ भी न हो सका। लेकिन इससे आम जनता के समक्ष आर्य समाज विजयी मुद्रा में आ खड़ा हुआ जिस पर वह गर्व कर सकता था। स्वामी इन्देवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी व उनके साथियों की गिरफ्तारी ने शंकाराचार्य के वेद विरोधी मंतव्यों की स्वतः ही पोल खोल कर रख दी थी।